Smt. Shanta Singh
Sr. Asstt prof
Dept. of L.S.W.
SNSARS College, Sasaram

श्रम - उत्पादकता
(PRODUCTIVITY OF LABOUR)

किसी भी देश के आर्थिक विकास के संबंध में उत्पादकता शब्द ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। श्रम-उत्पादकता का व्यापक आर्थिक और सामाजिक महत्व है। किसी भी देश में आर्थिक विकास, राष्ट्रीय आय की वृद्धि, नागरिकों तथा श्रमिकों के रहन-सहन के स्तर में सुधार, बेरोजगारी एवं निर्धनता की समस्याओं के समाधान तथा कई अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक विषय श्रम-उत्पादकता से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में जुड़े होते हैं। विकासशील देशों में तो श्रम-उत्पादकता को ऊँचे स्तर पर बनाए रखना और भी आवश्यक होता है।

श्रम-उत्पादकता का अर्थ
(MEANING OF LABOUR PRODUCTIVITY)

सामान्यतः उत्पादकता शब्द वस्तुओं और सेवाओं के रूप में उत्पादित की गई संपत्ति की उत्पत्ति की मात्रा (output) और उत्पादन-क्रिया में प्रयुक्त साधनों की मात्रा (input) के बीच अनुपात के लिए प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में, उत्पादन के किसी कारक की निश्चित मात्रा द्वारा किसी निश्चित समय में उत्पादित भौतिक वस्तुओं या सेवाओं की मात्रा उस कारक की उत्पादकता कहलाती है। इसी आगत-निर्गत विश्लेषण (input-output analysis) के आधार पर उत्पादन के सभी कारकों की उत्पादकता का परिकलन किया जा सकता है।

श्रम उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है। यह उत्पादन के अन्य कारकों, जैसे भूमि और पूँजी, का प्रयोग कर

Scanned with CamScanner

तरह-तरह की भौतिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है। सामान्य प्रचलन में निर्गत और श्रम-आगत के अनुपात को श्रम-उत्पादकता कहते हैं। (Labour productivity is the ratio of output to Labour input.) दूसरे शब्दों में, "श्रम-उत्पादकता से भौतिक वस्तुओं और सेवाओं की उस मात्रा का बोध होता है जो निश्चित मात्रा में श्रम किसी निश्चित समय में उत्पादित करता है। इस तरह, किसी निश्चित समय में प्रति इकाई श्रम का उत्पादन ही श्रम-उत्पादकता है। श्रम की इस इकाई को मुख्यतः मानव-घंटा (man-hour) या मानव-दिन (man day) में व्यक्त किया जाता है। श्रम-उत्पादकता की अवधारणा को निम्न लिखित उदाहरण के द्वारा आसानी से समझा जा सकता है —

उदाहरण :- अगर किसी सूती वस्त्र कारखाना 'A' में 100 श्रमिक उत्पादन में लगे हैं और वे 8 घंटे प्रतिदिन काम कर एक दिन में 8000 मीटर कपड़ा तैयार करते हैं, तो वहाँ श्रम-उत्पादकता $\frac{8000}{100\times 8} = 10$ मीटर प्रति मानव घंटा या $\frac{8000}{100} = 80$ मीटर प्रति मानव-दिन कही जाएगी।

श्रम-उत्पादकता का परिकलन कई स्तरों पर किया जा सकता है, जैसे- प्रतिष्ठान, उद्योग या क्षेत्र के स्तर पर श्रम-उत्पादकता। श्रम-उत्पादकता को अधिकांशतः वस्तुओं या सेवाओं की भौतिक मात्रा के रूप में ही मापा जाता है, लेकिन विशेष प्रयोजनों के लिए उसे मूल्य (value) के रूप में भी व्यक्त किया जाता है। मूल्य-उत्पादकता (value productivity) उत्पादित की जानेवाली वस्तुओं की भौतिक मात्रा की प्रचलित कीमतों के आधार पर सरलता से निकाली जा सकती है। कीमतों में अधिक बारम्बार परिवर्तन होते रहने के कारण मूल्य-उत्पादकता में भी परिवर्तन होते रहते हैं, जबकि वस्तुओं की भौतिक-मात्रा के साथ ऐसी बात नहीं होती।

Scanned with CamScanner

'P. Sargent florence के अनुसार श्रम उत्पादकता का माप, सीधे तौर पर उत्पादन की मात्रा, किस्म तथा मितव्ययता, जो प्रति श्रमिक अथवा श्रमिक के एक छोटे समूह के आधार पर निकाली जाती है अथवा इसके विपरीत अप्रत्यक्ष रूप से श्रमिकों की अनुपस्थिति, कारखाना छोड़ना तथा दुर्घटनाओं के दर के आधार पर निकाली जाती है।

[The Productivity of labour can be measured directly by quantity. quality and economy of output for workers or small groups of worker, or measured indirectly and conversely by rates of absentism, turnover accident etc among large group of workers.]

Currie 'क्यूरी' के अनुसार उत्पादकता व्यापक अर्थ में साधनों के प्रयोग से जो उत्पादन हम करते हैं उनके बीच की मात्रक सम्बन्ध है।

[Productivity in its broadest sence is the quantitative relationship between what we produce and resources we use.]

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार उत्पादकता से आशय समूह, समाज अथवा देश के साथ समस्त उपलब्ध वस्तुओं एवं सेवाओं के अनुपात से है, जिसमें मानव, मशीन, माल, मुद्रा, शक्ति तथा भूमि आदि समस्त उपलब्ध साधनों का पूर्ण एवं उचित और क्षमतापूर्ण उपयोग निहित है। यह प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक प्रकार के अपव्यय के विरुद्ध संगठित आक्रमण है। उत्पादकता एक ऐसी अवधारणा है जिसका अर्थ अथवा परिभाषा देना अथवा इसे मापना मुश्किल है। इसलिए उत्पादकता का माप कल कारखानों में प्रयुक्त विभिन्न साधनों के उपयोग का श्रम के आधार पर ही होता है।

Scanned with CamScanner

श्रम-उत्पादकता के संबंध में राष्ट्रीय श्रम आयोग (National Commission on Labour) ने कहा है, "श्रम उत्पादनशीलता के मापन में मुख्य कठिनाई इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि उत्पादन केवल श्रम का ही उत्पादन नहीं होता। पूँजी, शिल्प-विज्ञान तथा प्रबंध - सभी इसमें श्रम के साथ योगदान करते हैं और ये बहुत कम स्थिर रहते हैं। परिणामस्वरूप प्राप्त वास्तविक उत्पादन में वृद्धि को अकेले श्रम के कारण हुई नहीं मानी जा सकती और यह कुल उत्पादन के संबंध में और भी कम होगी।" केवल उसी स्थिति में जब उत्पादन के अन्य कारक कम या अधिक मात्रा में स्थिर हों, तभी उत्पादन में श्रमिकों के योगदान के निर्धारण में कठिनाइयाँ कम होती हैं।

श्रम-उत्पादकता को साधारणतः मानव-घंटों या मानव-दिनों में मापा जाता है। समय पर आधारित इस गणना में श्रमिकों के बीच कौशल, शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुभव आदि से संबंधित भिन्नताओं को सामान्यतः सम्मिलित नहीं किया जाता, जिससे गणना त्रुटिपूर्ण हो जाती है। इस कारण, कई विशेषज्ञों ने इन भिन्नताओं के लिए भारिता (weightage) देने पर जोर दिया है।

अगर उत्पादन के सभी कारकों में समानुपातिक रूप से परिवर्तन हो, तब श्रम-उत्पादकता में परिवर्तनों का पता लगाया जा सकता है, लेकिन अगर कोई एक कारक श्रम की तुलना में अधिक तेज या धीमी गति से परिवर्तित होता है, तो श्रम-उत्पादकता का निर्धारण कठिन होता है।

श्रम-उत्पादकता की अवधारणा में निहित सीमाओं के बावजूद इसे आर्थिक विकास और रहन-सहन के स्तर में सुधार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता है। यही कारण है कि आज विश्व के अनेक देशों में श्रम-उत्पादकता को ऊँचे स्तर पर बनाए रखने के लिए नियोजकों तथा राज्य की ओर से विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

Scanned with CamScanner

श्रम - उत्पादकता की माप
(Measures for Increating Labour's Productivity)

उत्पादकता की सही माप का अभी तक कोई वैज्ञानिक आधार विकसित नहीं हो पाया है। परम्परागत तरीकों के आधार पर उत्पादकता का माप एक इकाई की उत्पादन में लगाए गए श्रम घंटे के आधार पर की जाती है। चूँकि उत्पादकता का कम सही एवं प्रमाणिक माप उपस्थित नहीं कर सके हैं, इसलिए इस विषय में लोगों की उदासीनता रही है। उत्पादकता उत्पत्ति के साधन एवं उत्पादन का एक अनुपात है इसीलिए हम इस अनुपात को एक मानक माप नहीं कर सकते हैं क्योंकि समय एवं परिस्थिति के आधार पर यह निर्भर करती है। सितम्बर 1976 ई० में विभिन्न देशों के श्रम मंत्रीगणों का एक सम्मेलन तेहरान में हुआ था जो कुछ एशिया श्रम मंत्री सम्मेलन के नाम से जाना जाता है। उस सम्मेलन में प्रस्ताव पारित कर अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन से अनुरोध किया गया था कि उत्पादकता मापक तरीकों का निर्धारण करें चूँकि उत्पादकता उत्पादन में प्रयुक्त सभी साधनों के योगदान पर आधारित है। इसलिए इसका सही मूल्यांकन करना कठिन हो जाता है। भारत का राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद (National Productivity Council) तथा कपड़ा सूती वस्त्र अनुसंधान संघ ने उत्पादकता मापने के लिए मूल्य जोड़ने की (Value added Method) के तरीकों की सिफारिश की जिसके आधार पर वार्षिक बोनस की दरों को निर्धारित किया जा सके।

उत्पादकता माप का महत्व :- आज का युग औद्योगिक प्रगति का युग है। बढ़ती हुई आबादी और इसके फलस्वरूप बढ़ती हुई माँगों की पूर्ति के लिए अधिक उत्पादन की आवश्यकता है। मनुष्य का जीवन सुखमय हो, इसके लिए अधिक से अधिक भौतिक सामग्रियों का उत्पादन वांछनीय है। उत्पादकता बढ़ती या घटती है, इसका पता उसके माप से ही संभव है। उत्पादकता माप आर्थिक विश्लेषण

Scanned with CamScanner

का एक महत्वपूर्ण साधन है। किसी देश में आर्थिक और औद्योगिक संगठन के परिवर्तन के वैज्ञानिक निर्देशक के रूप में उत्पादकता सूचनांक (Productivity Index) का बहुत महत्व है। सरकार की औद्योगिक नीतियों का यह एक महत्वपूर्ण आधार होती है। राष्ट्र की आर्थिक क्षमता एवं आर्थिक स्तर का उचित मापदण्ड उत्पादकता के आधार पर ही होते हैं। उत्पादन विधियों में परिवर्तन पर प्रकाश उत्पादकता के आधार पर ही डाला जा सकता है। उत्पादन रोजगार मजदूरी, आदि के विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए उत्पादकता माप महत्वपूर्ण होता है।

उत्पादकता माप के दोष :-

उत्पादकता माप के निम्नलिखित दोष है।

1. उत्पादकता की माप सभी प्रकार के उद्योगों में संभव नहीं है। यह केवल सीमित उद्योग में ही संभव है। विशेषकर ऐसे उद्योग जिनमें भौतिक सामग्री का उत्पादन किया जाता है। जैसे सीमेंट, इस्पात, कोयला, कपड़ा, इत्यादि में ही उत्पादकता का सार्थीकरण संभव है। जिन उद्योगों में सेवाएं प्रधान होती है, जैसे बीमा, बैंक इत्यादि में इसके मापदण्ड का प्रयोग संभव नहीं होता है।

2. चूँकि उत्पादकता का माप उत्पादन के सभी साधनों के आधार पर होता है, इसलिए उत्पादकता बढ़ने पर ठीक रूप से यह पता नहीं लगाया जा सकता कि उसमें किसी एक साधन का कितना योगदान है।

3. उत्पादकता उत्पादन का केवल एक अनुपातिक भाग है। इसलिए अनुपात बढ़ जाने से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि आर्थिक क्रियाओं की क्षमता बढ़ी है।

—